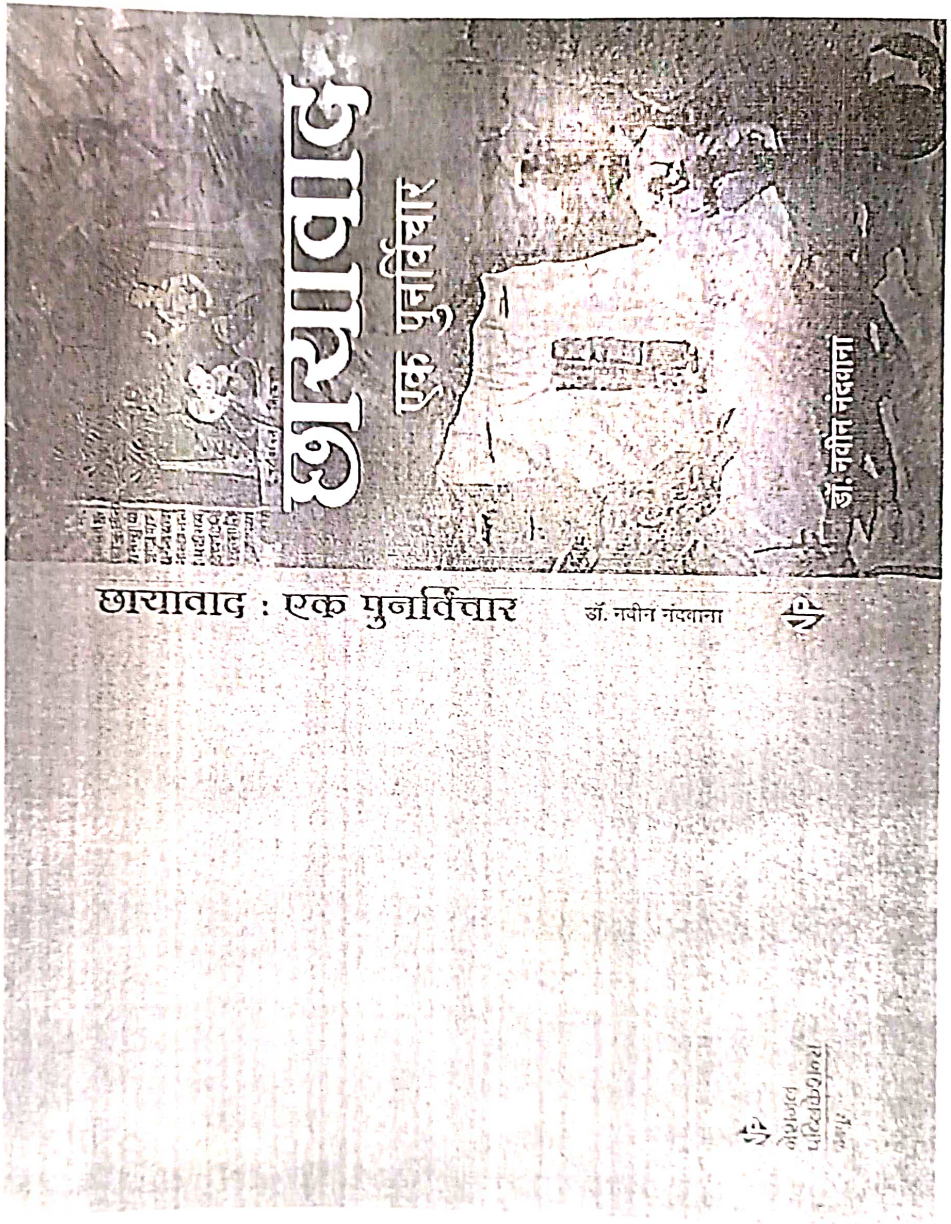
छायावाद
एक पुनर्विचार
डॉ. नवीन नंदवाना
छायावाद : एक पुनर्विचार
डॉ. नवीन नंदवाना

छायावाद

एक पुनर्विचार

डॉ. नवीन नंदवाना
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर (राज.)

नेशनल पब्लिकेशन्स
जयपुर

CHHAYAVAD : EK PUNARVICHAR
by
Navin Nandwana

ISBN 978-93-92688-00-3

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2022

मूल्य : ₹ 495

प्रकाशक
नेशनल पब्लिकेशन्स
श्याम फ्लैट्स, फतेहपुरियों का दरवाजा
चौड़ा रास्ता, जयपुर - 302 003
फोन : 0141-4914552
ई-मेल : natbooks337@gmail.com

टाइपसैटिंग
नेशनल कम्प्यूटर्स, जयपुर

मुद्रक
हरीश आर्ट प्रिंटर्स, जयपुर

337

भूमिका

छायावादी कवियों और उनके काव्य को लेकर कुछ गहन अध्ययन और उस पर लेखन की इच्छा लंबे समय से थी। वर्ष 2019 की फरवरी में जब सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता पर संगोष्ठी आयोजित की, तब से यह इच्छा और बलवती होती गई किंतु प्रत्येक कार्य के होने या करने में हमारा वश कहाँ चल पाता है। राष्ट्रकवि दिनकर ने लिखा है—"यह सब उनकी कृपा, सृष्टि जिनकी निगूढ़ रचना है, झुके हुए हम धनुष मात्र हैं, तनी हुई ज्या पर से, किसी और की इच्छाओं के बाण चला करते हैं।" अत: स्पष्ट है कि प्रत्येक कार्य का आरंभ और पूर्णता सभी कुछ नियत होते हैं और शायद उसी नियत के कारण इस पुस्तक का लेखन और प्रकाशन टलता रहा। वास्तव में इस विषय पर पुस्तक लेखन का विचार उस समय आया, जिस समय हम छायावाद का शताब्दी वर्ष मना रहे थे। पर वह केवल विचार मात्र ही रह गया। समय-समय पर संशोधन और परिवर्धन भी होते रहे और प्रकाशन तक आते-आते वर्ष 2022 आ गया। यह विचार अब इस पुस्तक का रूप ले पाया।

इस पुस्तक का लेखन-काल बड़ा ही कठिन और पीड़ादायी रहा है, मेरे व्यक्तिगत जीवन के लिए भी और संपूर्ण संसार के लिए भी। व्यक्तिगत वेदना ने मेरे हृदय के कितने टुकड़े किए होंगे, नहीं कह सकता। उन टुकड़ों को खोजना, एक साथ करना और पुन: एक सही आकार देना न मेरे वश का है और न ही संसार में किसी और के वश का। ऐसे में जब मैं अपने टूटे दिल से पीड़ा में डूबा था, तब वेदना एवं करुणा के भावों को और अधिक गहराई से समझा। तब यह विचार उमड़-घुमड़कर मेरे मन-मस्तिष्क में आता रहा कि 'पर शेष नहीं होगी मेरे प्राणों की पीड़ा'। पीड़ा के इसी सागर में जब संवेदनाओं की उथल-पुथल मची थी, इसी बीच कोरोना महामारी ने संपूर्ण विश्व को एक बड़े संकट में डाल दिया। अत: यह समय मेरे लिए व्यक्तिगत वेदना से विश्व वेदना की यात्रा का रहा है।

लॉकडाउन की अवधि ने हम सभी को घरों में कैद कर लिया था। छायावाद से जुड़ी कई किताबें पुस्तकालय से बहुत पहले निकलवा चुका था। घर की व्यक्तिगत लाइब्रेरी में भी बहुत पुस्तकें मिल गईं। ऑनलाइन सामग्री ने भी बहुत मदद की और ऐसे में वेदना से गुजरते हुए सबसे पहले महादेवी की रचनाओं को पढ़ा और धीरे-धीरे कुछ लिखने का प्रयास किया। पुस्तक लेखन जैसा विचार नहीं था किंतु लंबी लॉकडाउन की अवधी में धीरे-धीरे इस क्रम को जारी रखा जिससे यह पुस्तक अपना स्वरूप ले पाई।

इस पुस्तक में कुल पाँच अध्याय हैं। पहले अध्याय में छायावाद की सैद्धांतिकी पर विचार है। वहीं आगे के चार अध्यायों में छायावाद के चारों स्तंभ कवियों—प्रसाद, निराला, पंत एवं महादेवी के कृति-व्यक्तित्व की पहचान, पुनर्विचार एवं रचना वैशिष्ट्य की परख करने का प्रयास किया गया है। 'छायावाद' पर उपलब्ध चर्चित पुस्तकों के अध्ययन के बाद इस पुस्तक के लेखन में इस बात को विशेष रूप से ध्यान में रखा गया है कि पुस्तक में वर्णित विषयों का प्रतिपादन सहज और सरल भाषा में हो। साथ ही स्नातकोत्तर से लेकर प्रतियोगी परीक्षाओं के परीक्षार्थियों तक सभी के लिए यह पुस्तक सहायक सिद्ध हो। इसी कारण विद्यार्थियों से जुड़े सभी पाठ्यक्रमों, जैसे—विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रम, लोकसेवा आयोग परीक्षाओं के पाठ्यक्रम और नेट-स्लेट आदि परीक्षाओं के पाठ्यक्रमों आदि को ध्यान में रखकर इस पुस्तक का लेखन किया गया है। आशा है यह पुस्तक सभी परीक्षार्थियों के लिए तो उपयोगी होगी ही, साथ ही रुचिवान पाठकों एवं शोधार्थियों के लिए भी सहायक सिद्ध होगी।

—डॉ. नवीन नंदवाना

325

अनुक्रम

1. छायावाद : अर्थ, अवधारणा और स्वरूप 1

छायावाद : अर्थ, नामकरण एवं अवधारणा / 1
छायावाद : प्रवर्तन, प्रवर्तक और समय सीमा / 3
छायावाद : परिभाषाएँ / 4
छायावाद : प्रवृत्तियाँ एवं स्वरूप / 5
सौंदर्य चेतना / 5
प्रेम निरूपण / 9
वैयक्तिकता / 14
रहस्यवाद / 16
वेदनानुभूति / 18
राष्ट्रीयता / 21
मानवीकरण / 24
प्रकृति वर्णन / 27
मानवतावादी दृष्टि / 31
काव्य भाषा / 33
छंद योजना / 36
अलंकार योजना / 40
बिंब विधान / 44
प्रतीक योजना / 46

2. जयशंकर प्रसाद 49

जन्म एवं पारिवारिक जीवन / 49
व्यक्तित्व वैशिष्ट्य / 51
रचना संसार / 53
छायावादी रचनाएँ / 57
कामायनी : कथावस्तु / 66
कामायनी : महाकाव्यत्व / 70
कामायनी : रूपक तत्त्व / 73
प्रसाद का काव्य : रचना-वैशिष्ट्य / 76
सौंदर्य चेतना / 77
प्रेम निरूपण / 78
मानवीकरण / 79
चित्रात्मकता / 80
मानवतावादी दृष्टिकोण / 80
राष्ट्रीयता / 81
प्रकृति चित्रण / 82
रस योजना / 83
काव्य भाषा / 84
छंद योजना / 84
अलंकार योजना / 85
लाक्षणिकता / 85
बिंब योजना / 86
प्रतीक योजना / 87

3. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' 88

जन्म एवं पारिवारिक जीवन / 88
शिक्षा-दीक्षा / 90
संघर्ष और साहित्य / 90
व्यक्तित्व वैशिष्ट्य / 91

326

रचना संसार / 92
रचना वैशिष्ट्य / 102
प्रेम निरूपण / 103
आत्माभिव्यक्ति / 105
मानवतावादी दृष्टिकोण / 106
रहस्यवाद / 107
प्रकृति चित्रण / 109
राष्ट्रीयता / 110
अभिव्यक्ति पक्ष / 111
काव्य भाषा / 111
छंद योजना / 112
अलंकार योजना / 114
बिंब विधान / 115
प्रतीक योजना / 116

4. सुमित्रानंदन पंत 118

जन्म एवं पारिवारिक जीवन / 118
शिक्षा-दीक्षा / 119
व्यक्तित्व वैशिष्ट्य / 119
काव्य प्रेरणा / 120
पंत की काव्य यात्रा / 121
रचना संसार / 122
रचना वैशिष्ट्य / 133
सौंदर्य चेतना / 133
प्रेम वर्णन / 138
पंत : प्रकृति चित्रण / 140
काव्य भाषा / 146
शब्द प्रयोग / 147
अलंकार / 148
बिंब विधान / 149

5. महादेवी वर्मा 150

जन्म एवं पारिवारिक जीवन / 150
शिक्षा-दीक्षा / 151
विराट व्यक्तित्व / 152
रचना संसार / 154
पुरस्कार, सम्मान और उपाधियाँ / 154
अन्य उपलब्धियाँ / 155
अवसान / 155
यामा : चार याम / 155
रचना वैशिष्ट्य / 159
प्रेम निरूपण / 159
सौंदर्य चेतना / 161
वेदनानुभूति / 162
रहस्यवाद / 164
मानवतावादी दृष्टिकोण / 167
स्वानुभूति की विवृत्ति / 169
प्रकृति वर्णन / 171
गीति योजना / 174
काव्य भाषा / 179
लाक्षणिकता / 180
प्रतीकात्मकता / 180
अलंकार योजना / 182

□□□

327